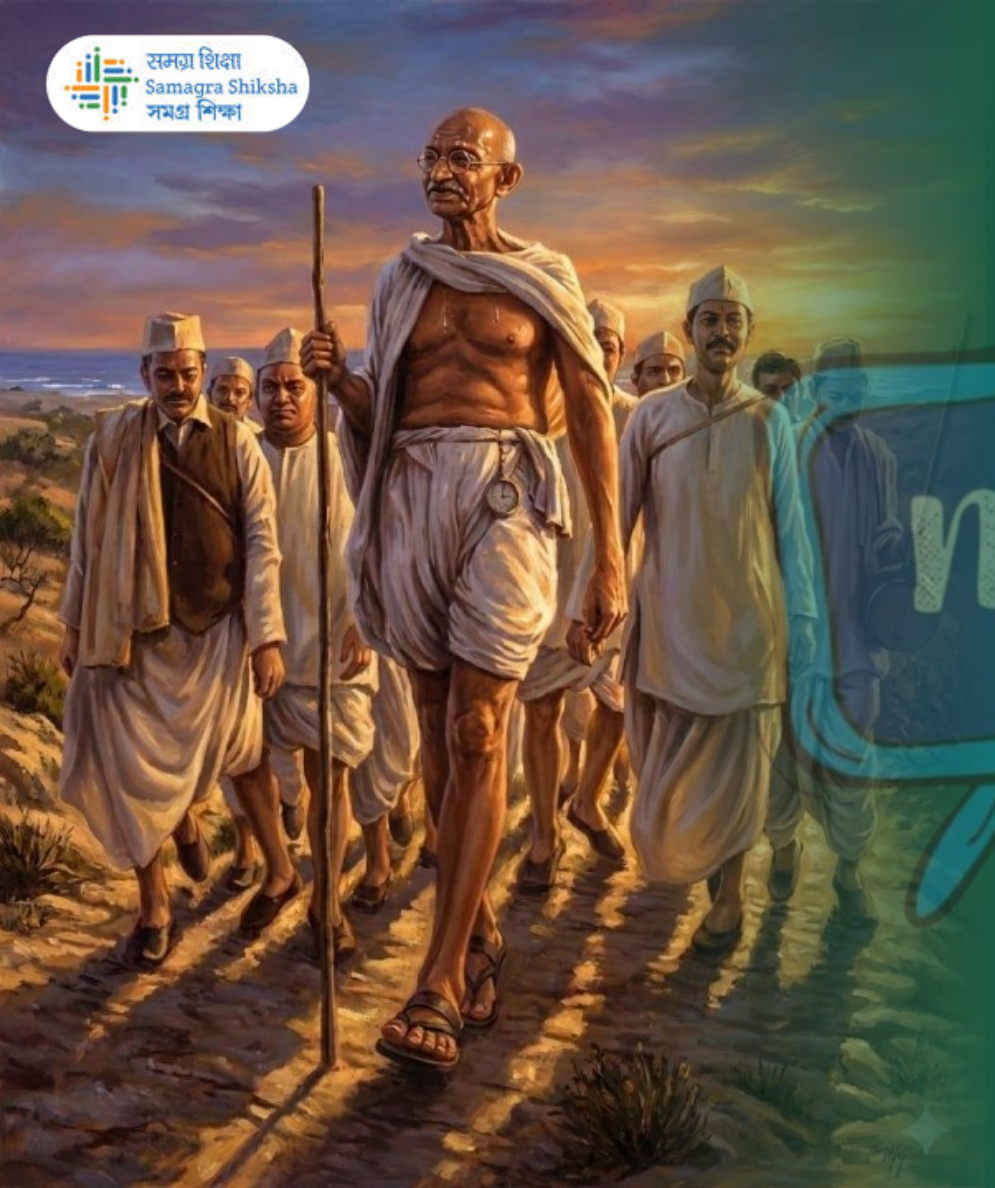


कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 14

साबरमती के संत

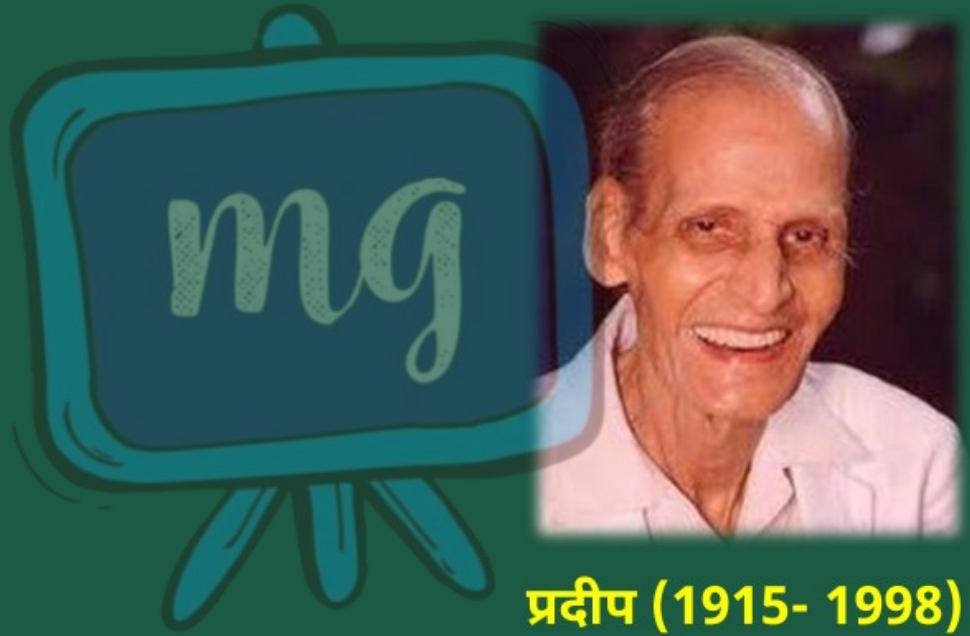
प्रदीप

भाग – 1

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



प्रदीप (1915- 1998)

कवि परिचय

वास्तविक नाम: रामचंद्र द्विवेदी

जन्म: 6 फरवरी, 1915, मध्य प्रदेश

शिक्षा: लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक (1939)

पेशा: महान गीतकार एवं कवि

कर्म जीवन : प्रदीप जी शिक्षक बनना चाहते थे, लेकिन मुंबई के एक कवि सम्मेलन में उनके कविता से प्रभावित होकर। बॉम्बे टॉकीज के मालिक हिमांशु राय ने उन्हें फिल्म 'कंगन' (1939) के लिए गीतकार के रूप में चुना ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

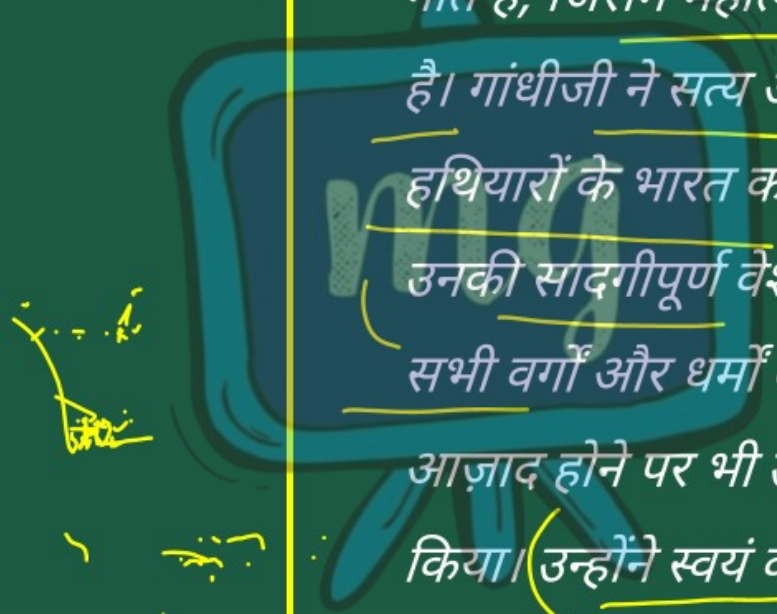
प्रमुख फिल्मी योगदान: उन्होंने 'बंधन', 'झूला', 'नया संसार', 'किस्मत' और 'पुनर्मिलन' जैसी कई सुपरहिट फिल्मों के गीत लिखे। उनके गीतों की विशेषता सरल भाषा, ओज और देशभक्ति की भावना थी।

प्रमुख सम्मान एवं पुरस्कार: दादा साहेब फाल्के पुरस्कार, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, नेशनल इंटीग्रेशन अवार्ड और राजीव गांधी अवार्ड, इम्पा अवार्ड, महान कलाकार का अवार्ड, और संत ज्ञानेश्वर पुरस्कार।

निधन: 11 दिसंबर, 1998 ई.

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



"साबरमती के संत" कवि एवं गीतकार प्रदीप का प्रसिद्ध गीत है, जिसमें महात्मा गांधी के जीवन-आदर्शों का वर्णन है। गांधीजी ने सत्य और अहिंसा के बल पर बिना हथियारों के भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराया। उनकी सादगीपूर्ण वेश-भूषा और अद्भुत संगठन शक्ति से सभी वर्गों और धर्मों के लोग उनके पीछे चल पड़े। देश आज़ाद होने पर भी उन्होंने किसी पद को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने स्वयं कष्ट सहकर देशवासियों को स्वतंत्रता प्रदान की और विश्व को सत्य, अहिंसा व प्रेम का संदेश दिया।

दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल

साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल

आंधी में जलती रहे गांधी तेरी मशाल, साबरमती के संत ...।



आजादी – স্বাধীনতা

खड्ग – তৰোৱাল

साबरमती - গুজৰাটৰ প্ৰসিদ্ধ নদী, য'ত বাপুজীৰ আশ্ৰম আছে ।

संत- সাধু, সন্ত

रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम

घर ही पे लड़ी तूने अजब की लड़ाई

दागा न कहीं तोप न बन्दूक चलाई

दुश्मन के किले पर भी न की तूने चढ़ाई

वाह रे फकीर खूब करामात दिखाई

चुटकी में दिया दुश्मनों को देश से निकाल, साबरमती के संत...।

रघुपति – ভগৱান ৰাম पतित – नीच, स्खलित

पावन - পবিত্র चढ़ाई- আক্রমণ

फकीर - মহাত্মা, সাধু चुटकी में- সহজতে

शतरंज बिछाकर बैठा था यहीं पे जमाना

लगता था मुश्किल है फिरंगी को हटाना

टक्कर था बड़े जोर का दुश्मन भी था जाना

पर तू भी था बापू बड़ा उस्ताद पुराना

मारा वो दाव कसके उल्टी भी न चली चाल, साबरमती के संत ..।

फिरंगी- বিদেশী

उस्ताद – পার্গত, গুৰু

जब-जब तेरी बिगुल बजी जवान चल पड़े

मजदूर चल पड़े किसान चल पड़े

हिन्दू, मुसलमान, सिख, पठान चल पड़े

कदम पे तेरा कोटि-कोटि प्राण चल पड़े

फूलों के सेज छोड़ के दौड़े जवाहरलाल, साबरमती के संत ...।

बिगुल	- মুখেৰে বজোৱা এক বাদ্যযন্ত্র
सेज	- কোমল বিচনা
कोटि-कोटि	- কোটি কোটি

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मन थी अहिंसा की बदन पे थी लंगोटी

लाखों में लिए घुमता था सत्य की सोटी

वैसे तो देखने में भी हस्ती तेरी छोटी

सर देख के झुकती थी हिमालय की भी चोटी

दुनियां में तू बेजोड़ था इंसान बेमिशाल, साबरमती के संत ...।

सोटी	-	लाठि
हस्ती	-	व्यक्तित्व
बेमिशाल	-	अतुलनीय

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

जग में कोई जिया तो बापू ने ही जिया

तूने वतन की राह पर सब कुछ लूटा दिया

मांगा न तूने कोई तख्त बेताज ही रहा

अमृत दिया सभी को खुद जहर पिया

जिस दिन तेरी चिता जली रोया था महाकाल, साबरमती के संत...।

वतन	-	देश
बेताज	-	मुकुटविहीन
जहर	-	विष

मूल्यांकन



1 “साबरमती के संत” गीत के कवि एवं गीतकार कौन हैं?

A रामधारी सिंह दिनकर

B कवि प्रदीप

C हरिवंश राय बच्चन

मूल्यांकन



2 "कोटि-कोटि प्राण चल पड़े" का क्या अर्थ है?

A लोग डर गए

B करोड़ों लोग साथ चल पड़े

C लोग भाग गए

मूल्यांकन



3 | गांधीजी ने भारत को आज़ादी कैसे दिलाई?

A हथियारों से

B युद्ध करके

C सत्य और अहिंसा से